बोगाना और वाना –1

बोगाना और वाना तुमसे थोड़े बड़े दो बच्चे हैं। वो रहते हैं यहां से बहुत, बहुत दूर, घने जंगलों के बीच **अमेज़न नदी** के पास। जंगल कितना घना है यह नीचे दिए गये चित्र में देखो। यह चित्र हवाई जहाज़ से लिया गया है।

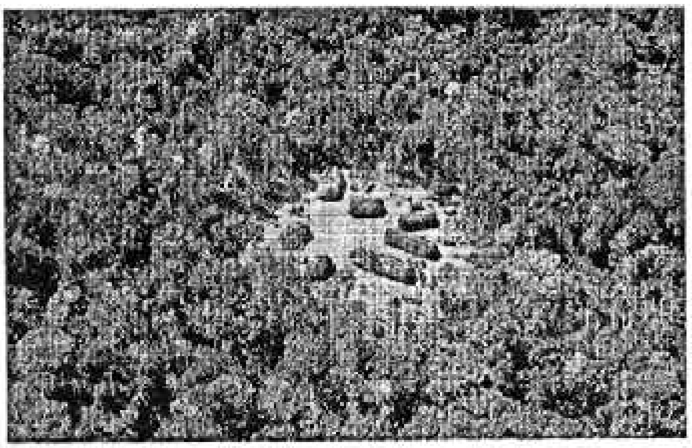

वाना और बोगाना अपने **कबीले** के साथ रहते हैं। जैसे तुम अपने गांव या मोहल्ले में बस कर रहते हो वैसे उनका कबीला एक जगह बस कर नहीं रहता। वे लोग जंगल की थोड़ी-सी जगह साफ करके वहां अपने घर बनाते हैं। घर के आसपास थोड़ा-सा बगीचा बनाते हैं जिसमें वे सब्ज़ी, कंद आदि उगाते हैं। थोड़े दिनों बाद वे जंगल में ही किसी दूसरी जगह चले जाते हैं।

एक मजेदार बात यह है कि वाना के यहां साल भर एक ही मौसम रहता है। रोज़ खूब गर्मी पड़ती है और खूब पानी गिरता है। इसीलिए तो जंगल इतना घना है। और इसीलिए साल भर सभी सब्ज़ियां उग आती हैं। अपने यहां जैसा नहीं कि ठंड में गोभी और गर्मी में कद्दू। और फिर इतनी गर्मी में ज़्यादा कपड़े पहनने की भी ज़रूरत नहीं।

नीचे दिए गये चित्र में बोगाना और वाना के घर और कपड़े देखो।

खुशी-खुशी - कक्षा - 4 - भाग-1

बोगाना और वाना का घर

खूब गर्मी और खूब बरसात। तुम ऐसी ही एक जगह के बारे में पढ़ चुके हो - न्यू गिनी और पापुआ न्यू गिनी, जहां लोग ज़मीन से ऊपर घर बनाते हैं। अमेज़न नदी न्यू गिनी से बहुत दूर है। फिर भी वहां का मौसम न्यू गिनी जैसा ही है। वाना का कबीला तो अपने घर ज़मीन से ऊपर नहीं बनाता; पर थोड़ी दूर नदी के तट पर लोग ऐसे घर ज़रूर बनाते हैं – चूंकि वहां हमेशा बाढ़ का डर लगा रहता है।

चलो, तुम्हें वाना और बोगाना की एक कहानी सुनाते हैं। इस कहानी में बहुत-सी ऐसी चीज़ों के नाम आएंगे जो तुमने पहले कभी नहीं सुने होंगे। कई नई तरह की सब्ज़ियां, विशेष जानवर व औज़ार आदि, तुम्हारे यहां नहीं होते हैं। इस कहानी में ऐसे नए शब्द गहरे काले में छपे हैं, जैसे पेकरी। उनके चित्र भी कहानी के बीच-बीच में दिए हैं।

कहानी पढ़ना शुरू करने से पहले ये शब्द और उनके चित्र ढूंढो। इनमें से कौन-कौन से जानवर हैं?

हैमक, काली मिर्च की हांडी, मनियोक, पेकरी, टापीर, स्लाथ, नुकीली डंडी, ब्लोगन, जैगुआर, मैचेट

बोगाना का पहला शिकार

बोगाना पहले कभी अपने पिता के साथ शिकार पर नहीं गया था। कबीले के आदमी और कुछ बड़े लड़के ही शिकार पर जाते थे। अब बोगाना भी बड़ा हो रहा था। वह बार-बार अपने पिता से पूछता,"मैं शिकार पर कब जाऊंगा?" आखिर वह दिन आ गया जब बोगाना के पिता ने तय किया कि इस बार बोगाना भी साथ शिकार पर जाएगा।

सब लोग शिकार के लिए अपनी-अपनी तैयारी कर रहे थे। बोगाना बहुत खुश था। यह उसका पहला शिकार जो था। उसके पिता ने उसके लिए नया ब्लोगन भी बनाया था।

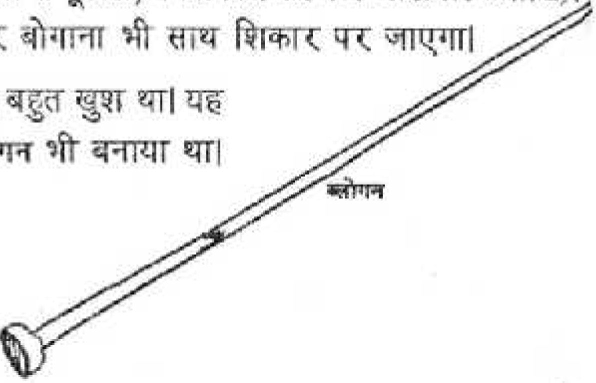

बोगाना का कबीला शिकार पर निकला

सुबह तड़के ही बोगाना और उसके पिता कबीले के दूसरे आदमियों के साथ शिकार पर निकल पड़े। वहां का जंगल बहुत ही घना था। पगडंडी पतली-सी थी। चारों तरफ झाड़ियां और बेलाएं थीं। सबको एक के पीछे एक चलना पड़ रहा था। वहां पेड़ और झाड़ियां बहुत ही जल्दी उग आते हैं। जब रास्ते में कोई झाड़ी या बेल आ जाती तो आदमी उसे अपने मैचेट से काट डालते (*देखो चित्र*)। जंगल इतना घना था कि मैचेट से काटे बिना चला नहीं जा सकता था।

आदमी के हाथ में मैचेट

सब बड़े ध्यान से आसपास के पेड़ों पर और आगे जंगल में देखते हुए चल रहे थे - कहीं कोई शिकार न दिख जाए। बोगाना अपना नया ब्लोगन और डार्ट लेकर चल रहा था। डार्ट पर ज़हर लगाकर सुखाया था।

कुछ देर बाद रास्ते में एक नाला पड़ा। नाले पर बेलाओं की रस्सियों से बना एक पुल था। एक-एक करके सबने उस पुल से नाला पार किया। नाला पार करते ही बोगाना के पिता ने एक पेड़ पर कई सारे बंदर देखे। एक और आदमी ने भी उन्हें देखा और अपना ब्लोगन मुंह से लगाया। बोगाना के पिता ने कहा "रुको, मेरा बेटा मारेगा।" बोगाना का पहला शिकार था, इसलिये दूसरे आदमी ने अपना ब्लोगन नीचे कर लिया।

अब बोगाना की बारी थी। उसने ब्लोगन में डार्ट डाल कर बंदर पर निशाना लिया। पर तभी उसे बंदरों के ऊपर की डाल पर एक जैगुआर दिखाई दिया (जैगुआर तेंदुए जैसा होता है और उतना ही खतरनाक)। बोगाना जैगुआर से बहुत डरता था। उसे देखकर बोगाना घबराया, इतनी ज़ोर से चौंका कि उसके हाथ से ब्लोगन गिर गई। अपनी ब्लोगन वहीं छोड़कर बोगाना ज़ोर से भागा, जैगुआर से दूर . . .। भागते हुए उसने अपने पिता की आवाज़ भी नहीं सुनी। पिता कहते रह गए "डरो नहीं! डरो नहीं! हम तुम्हारे साथ हैं।"

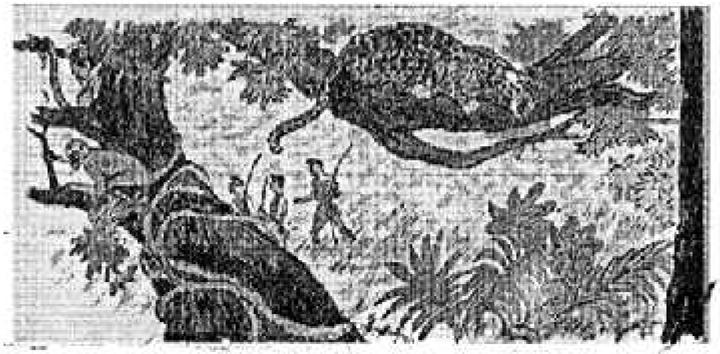
पेड़ की डाल पर जैगुआर

बोगाना ने एक टापीर मारा

कुछ देर बेतहाशा दौड़ने के बाद बोगाना रुका। वह ज़ोर-ज़ोर से हांफ रहा था। जैगुआर से तो बच गया पर अब उसे डांट का डर सताने लगा। उसे शर्म भी आ रही थी कि वह इस तरह डर कर भाग आया था। पता नहीं अब पिताजी शिकार पर ले भी जाएंगे या नहीं। पर अब ये सब सोचकर क्या फायदा, उसने मन ही मन कहा। "जाकर ब्लोगन फिर उठाता हूं, शायद कुछ और शिकार मिल जाए।"

बोगाना उसी जगह वापिस गया। डार्ट और ज़हर तो उसके पास थे ही। वह उस पेड़ के पास पहुंचा जहां उसने जैगुआर देखा था। अब वहां कोई भी खतरनाक जानवर नहीं था। वह झुककर झाड़ियों में अपनी ब्लोगन ढूंढने लगा। कुछ ही देर ढूंढने के बाद उसे एक पत्थर के करीब अपनी ब्लोगन मिल गई। अब वह ब्लोगन उठा कर नाले के किनारे पहुंचा और शिकार की उम्मीद में चुपके-चुपके चलने लगा।

अभी वह 15-20 मिनिट ही चला था कि बोगाना को एक छोटा टापीर दिखा। बोगाना ने एक झाड़ी के पीछे होकर झांका। टापीर पानी पी रहा था। बोगाना ने झट एक डार्ट को ज़हर में डुबोया, ब्लोगन की नली में डाला और निशाना ले कर फूंक मारी। डार्ट सीधे टापीर की गर्दन पर लगा। इससे पहले कि टापीर भागे बोगाना ने तेज़ी से एक और डार्ट मारा। टापीर वहीं ढेर हो गया और बोगाना दौड़ कर उस तक पहुंचा। उसने टापीर की गर्दन से डार्ट निकाले और उसकी जांच-पड़ताल की।

अब उसे लेकर कैसे जाएं? टापीर तो काफी भारी था। बोगाना ने टापीर की पिछली टांग पकड़कर खींचा। वज़न उससे हिल तो सकता था। उसने टापीर को घसीट कर ले जाना शुरू किया। बीच-बीच मे थक जाता तो आराम करता। थोड़ा सुस्ता लेने पर फिर बढ़ जाता, अपने घर की ओर ।

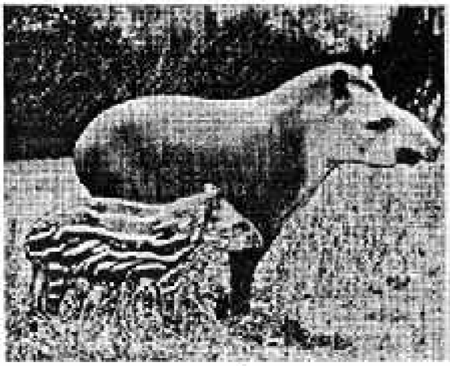

टापीर

सवाल

1. बोगाना और वाना कहां पर रहते थे?
2. शिकार पर जाने की बात से बोगाना क्यों खुश था?
3. बोगाना के लिए उसके पिता ने क्या बनाया था?
4. मैचेट किस काम में आता है?
5. बोगाना बंदर को क्यों नहीं मार पाया?
6. जब बोगाना को अपनी ब्लोगन दोबारा मिल गई तब वह शिकार के लिए नाले के पास चलने लगा। बोगाना को नाले के पास ही शिकार मिलने की उम्मीद क्यों थी?
7. टापीर को मारने के लिए बोगाना ने क्या-क्या किया?
8. इस पाठ में '——' के चिह्न कहां-कहां आए हैं?

   वे किस-किस के बोलने के लिए लिखे गए हैं?

   इस पाठ में बोना के पिता जी ने क्या-क्या कहा है?

बोगाना और वाना भाग - 2

वाना और उसकी मां बगीचे में

नुकीली डंडी से मनियोक निकालते हुए

जब बोगाना घर पहुंचा तब तक बाकी शिकारी लौटे नहीं थे। उसकी बहन वाना और मां बाकी औरतों के साथ घर के पास बगीचे में थे। वहां वे सभी कंद इकट्ठा कर रही थीं। वाना एक क्यारी से **मनियोक** के पौधे उखाड़ती जा रही थी। पर वह मिट्टी खोद-खोद कर मनियोक का एक टुकड़ा वापस ज़मीन में भी डाल देती ताकि मनियोक का दूसरा पौधा उग आए। मिट्टी खोदने के लिये उसके हाथ में एक **नुकीली डंडी** थी। उधर वाना की मां दूसरी क्यारी में से मीठे आलू खोद कर निकाल रही थी।

वाना मनियोक उखाड़ ही रही थी कि उसे दूर से बोगाना दिखाई दिया। वह किसी जानवर को घसीट रहा था। उसने सोचा सब शिकारी लौट आए हैं। पर बोगाना के पीछे कोई नहीं था। जब बोगाना वहां पहुंचा तो उसकी मां ने पूछा "तुम अकेले कैसे? बाकी सब कहां हैं?"

बोगाना ने कहा "वो सब मैं बाद में बताऊंगा। पहले देखो मैं क्या मारकर लाया हूं।"

टापीर देखकर मां, वाना और बाकी औरतें बहुत खुश हुईं। उन्होंने बहुत दिनों से गोश्त नहीं खाया था। आज बोगाना के शिकार से वे सचमुच खुश थीं। कुछ औरतें टापीर की चमड़ी निकालने में जुट गयीं। फिर उन्होंने टापीर का गोश्त साफ किया। खाना तो शाम को होने वाला था इसलिए सबने थोड़ा-थोड़ा गोश्त ले लिया और अपनी-अपनी **काली मिर्च की हांडी** में डाल दिया।

काली मिर्च की हांडी

यह काली मिर्च की हांडी क्या चीज़ होती है? यहां पर गरमी के कारण गोश्त और खाने की चीज़ें बहुत जल्दी खराब हो जाते हैं। इसलिए यहां रहने वाले लोगों के घरों में हमेशा एक हांडी चूल्हे के ऊपर टंगी रहती है। इसमें खूब सारी काली मिर्च रहती है, इस वजह से उसे काली मिर्च की हांडी कहा जाता है। जब भी शिकार से गोश्त मिलता है तो उस गोश्त को इस हांडी में डाल दिया जाता है। काली मिर्च के कारण वह काफी समय तक बिना खराब हुए रह जाता है। हांडी में मनियोक की जड़ का थोड़ा आटा भी डाला जाता है ताकि शोरबा(यानी रस)गाढ़ा हो जाए।

दोपहर हो गई थी और सूरज एकदम सिर पर था। गरमी बहुत ही बढ़ गई थी। जिस तरह की तेज़ गरमी हमारे यहां गरमियों के महीनों में होती है, वैसी ही गरमी वाना के यहां लगभग हर रोज़ होती है। ठंड तो कभी पड़ती ही नहीं है। इतनी गरमी में दोपहर के बाद कुछ काम नहीं होता। वाना, बोगाना और उनकी मां अपने-अपने **हैमक** में जाकर लेट गए।

हैमक एक झूले जैसा पलंग होता है जो कि बेलाओं और घास की रस्सी से बनता है। वाना और बोगाना लकड़ी की खाट पर इसलिये नहीं सोते क्योंकि यहां पर खूब चीटियां हैं जो लकड़ी की सभी चीजें खा जाती हैं। कुछ भी टिकने नहीं देती। (देखो चित्र)

हां, तो आज जब वाना और बोगाना सो रहे थे तब खूब पानी गिरा। यहां दोपहर की गरमी के बाद रोज़ ही पानी गिरता है। वाना और बोगाना तो इसके आदी थे और उनकी नींद पर कोई असर नहीं पड़ा।

हैमक

शाम को वाना और उसकी मां उठे और मनियोक के आटे की रोटियां बनाने लगे। रोटियां सेकने के लिए उन्हें एक गर्म पत्थर पर रखतीं! आग पत्थर के नीचे जल रही थी। साथ ही उन्होंने मीठे आलू भी राख में भूनने के लिए रख दिए।

गर्म पत्थर पर रोटियां बनाते हुए

इतने में सब आदमी शिकार से लौट आए। वे कुल मिलाकर कुछ तोते, दो बंदर, एक **पेकरी** और एक **स्लाथ** मारकर लाए थे। जानवरों को साफ करने के बाद सबने अपनी हांडियों में अपने-अपने हिस्से का गोश्त डाला।

शाम की दावत

रात का समय हो गया था। सब लोग खाने के लिए बैठे। सबसे पहले वाना ने ज़मीन पर एक बहुत बड़ी पत्ती बिछाई और उस पर केले रखे। उसकी मां ने हांडी उतार कर रखी। वाना ने मनियोक की रोटी सबके लिए रखीं।

खाने की महक से बोगाना के मुंह में पानी आ गया। उसने रोटी का एक टुकड़ा गोश्त के शोरबे में डुबाकर उसे मुंह में डाला। अहा - क्या स्वाद था! 'कितने दिनों बाद गोश्त खाने को मिल रहा है।' उसने चटखारे लेते हुए कहा।

'तुम्हारी बला से तो कुछ भी नहीं मिलता।' पिताजी उसपर बरस पड़े। 'भाग गया डरपोक कहीं का। सब लोग हंस रहे थे तेरे पर।' बोगाना के हाथ का कौर वहीं रूक गया। वह सिर झुकाकर पिताजी का गुस्सा झेलने के लिए तैयार हो गया। पर उसकी मां ने पिताजी को टोंकते हुए कहा, 'बोगाना पर यों न चिल्लाओ। आज गोश्त खिलाने में उसका बहुत बड़ा हाथ है। पता है, अकेला एक टापीर मारकर लाया है। बेचारे से खींचा भी नहीं जा रहा था।'

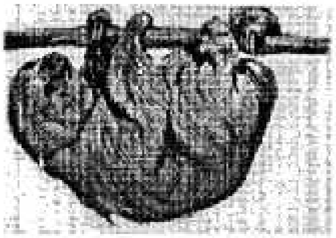

स्लाथ

'टापीर! और वह भी अकेले! हो ही नहीं सकता। तुम तो अपने बेटे को बचाने के लिए कहानी गढ़ रही हो! जो लड़का इतने सारे लोगों के साथ रहने पर भी जैगुआर देखकर भाग जाए, वह भला टापीर क्या मारेगा?'

बोगाना की मां ने कहा, 'विश्वास न हो तो टापीर की *ताज़ी* खाल देख लो। और दूसरी औरतों से भी पूछ लो। वाना, ज़रा जाकर टापीर की खाल तो ले आ। तेरे पिताजी को खाल देखकर ही यकीन होगा।'

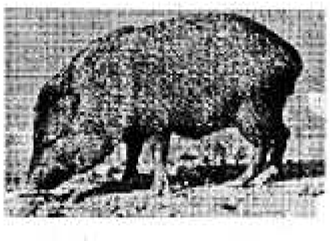

पेकरी

एक और औरत ने कहा, 'तुम्हारे बेटे की तो सचमुच दाद देनी चाहिए। इतना छोटा

होकर भी एक टापीर मार लाया और वह भी अकेला।" तब तक वाना खाल ले आई। खाल देखकर तो बोगाना के पिता की आंखें आश्चर्य से खुली रह गई। फिर वे धीरे से मुस्कराए और कहने लगे "बेटा, तूने आज अपनी नाक कटने से बचा ली और मेरी इज्ज़त भी रख ली।"

बोगाना का चेहरा खुशी से खिल उठा और वह फिर से डटकर खाने में जुट गया ।

1. वाना बगीचे में नुकीली डंडी से क्या काम कर रही थी? इसी काम के लिए हम लोग किसका उपयोग करते हैं?
2. शिकार का गोश्त काली मिर्च की हांडी में क्यों रखा जाता है?
3. बताओ सही या गलत

- हैमक के चार पाये होते है
- हैमक पेड़ों की डालियों से बनता है
- हैमक झूले जैसा होता है

4. दोपहर को पानी बरसने पर वाना और बोगाना की नींद क्यों नहीं टूटी?
5. बोगाना के पिता को किस वज़ह से आश्चर्य हुआ?
6.अमेज़न के लोग किन चीज़ों का गोश्त खाते है? गोश्त के अलावा वे और क्या-क्या खाते हैं?
7. अमेज़न नदी के पास का मौसम कैसा है?

<u>बोगाना का शिकार</u> इस नक्शे में बोगाना का झुंड के साथ शिकार पर जाना और अकेले लौट कर आना दिखाया गया है। नक्शे में बोगाना के घर से चलने व लौट कर आने के रास्ते पर पेंसिल चलाओ।
नक्शे में इस्तेमाल हुए संकेत नीचे दिए हैं।

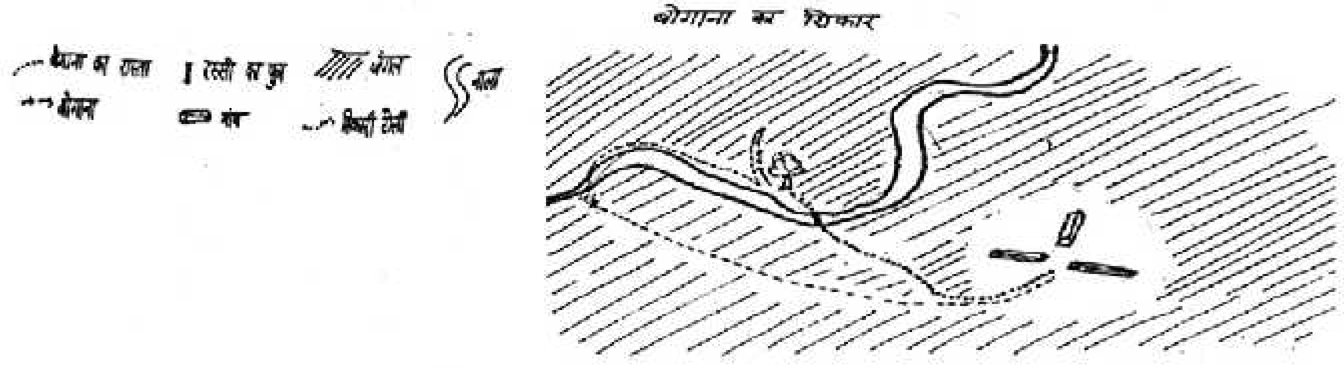

- हमारे यहां भी हम लोग रस्सियों से अपना बिस्तर बनाते हैं। बताओ कैसे?
- किस मौसम में खाना ज़्यादा सड़ता है? खाने को सड़ने से बचाने के लिए हमारे यहां क्या किया जाता है?

मतलब समझाओ

नाक कट जाना-
चटखारे लेना-
गुस्से में बरस पड़ना-

- ***किताब में जहां-जहां ये मुहावरे आए हैं, उन्हें रेखांकित करो। इनसे ऐसे वाक्य बनाओ जो पुस्तक में नहीं हैं।***

कक्षा के पुस्तकालय से कुछ किताबें पढ़ने के बाद इस पन्ने पर दिए सवालों के उत्तर दो।

आज मैंने पुस्तकालय से एक किताब पढ़ी।

किताबें

किताब का नाम था .... ।

मैंने अब तक .... किताबें पढ़ी हैं, यह मेरी .... किताब थी।

- ये किताब कितने पन्नों की थी? क्या तुम उसे पूरा पढ़ पाए?

- यह किताब तुम्हें कैसी लगी? क्यों?

- क्या इस पुस्तक में चित्र थे? कितने चित्र थे?

- किस-किस चीज़ के चित्र थे? कैसे लगे? सबसे अच्छा चित्र कौन सा लगा?

- क्या इस किताब में कुछ ऐसा था जो तुम्हें समझ नहीं आया हो?

- इस किताब में किसके बारे में लिखा गया था?

इसी तरह से और किताबों को पढ़कर उनके बारे में भी लिखो। जब भी तुम कोई किताब पढ़ो तो उसके बारे में अपनी कॉपी में लिखना।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

1. एक किताब और पढ़ो। इस किताब का नाम क्या है? इसको लिखने वाला लेखक कौन है?

2. इस किताब का मूल्य क्या है?

3. यह पुस्तक कहाँ छपी है? 4. कौन से वर्ष में छपी है?

5. यह किताब कहानी की थी या किसी के बारे में?

6. किताब में कौन–कौन था, क्या–क्या होता है, इसका विवरण लिखो।

7. तुमने और तुम्हारे दोस्तों ने कौन–कौन सी पुस्तकें पढ़ीं, उनकी सूची बनाओ। यह पता लगाओ कि वह किस तरह की किताबें थी। कहानी की, कविता की, किसी व्यक्ति के बारे में, किसी चीज के बारे में, या किसी और तरह की।

दोस्त का नाम	पुस्तक का नाम	किस तरह की किताब थी